प्रश्न सं. 1 'बिहारी-सतसई' में भावपक्ष तथा कलापक्ष-

बिहारीलाल रीतिकाल के महान कवि हैं। अनेक आलोचकों ने इन्हें रीतिकाल के सर्वोत्कृष्ट कवि के रूप में स्वीकार किया है। बिहारीलाल महाराज जयसिंह के राजाश्रित कवि थे। इन्हें सम्मान राजाश्रय निम्नलिखित दोहे पर मिला—

'नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सौं बंध्यौ आगे कौन हवाल।।'

बिहारी ने एक ही ग्रंथ लिखा 'बिहारी-सतसई'। यह ग्रंथ ब्रजभाषा में प्रणीत मुक्तक परंपरा की अप्रतिम कृति है। बिहारी की सतसई के दोहों के वैशिष्ट्य के संबंध में सूक्ति प्रसिद्ध है—

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करें गंभीर।'

समस्त हिन्दी-साहित्य में किसी एक ग्रंथ के प्रणयन पर किसी रचनाकार को महत्तम प्रशस्ति मिली है तो बिहारीलाल को।

'बिहारी-सतसई' की महत्ता भावपक्ष और कलापक्ष के सम्यक समन्वय में है। भावपक्ष के अंतर्गत मुख्यतः रस का उल्लेख होता है। भाव का तात्पर्य है कविता की अंतरंगता है। यही काव्य की आत्मा है। भाव की रसदशा को प्राप्त होकर आस्वाद बनता है।

'बिहारी-सतसई' में प्रधान रूप से श्रृंगाररस और गौण रूप से शांतरस का परिपाक हुआ है। श्रृंगाररस के दो पक्ष हैं— संयोगश्रृंगार और विप्रलंभ

शृंगार। बिहारी ने दोनों पक्षों का वर्णन किया है।
बिहारी का तेमादरी है —
'गिरि ते ऊंचे रसिक मन, बूड़े जहाँ हजार।
वहै सदा पशु नरन को प्रेमपयोधि पगार।'
अर्थात पर्वत से भी ऊंचे रसिकों के मन जिस प्रेमसागर में हजारों की संख्या में निमज्जन-निमज्जित हो जाते हैं, वही प्रेमसागर अरसिकों के लिए उथला लगता है।
रसास्वाद की महत्ता को बिहारी ने शब्दशः भी अभिव्यक्त किया है —
'तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तरे, जे बूड़े सब अंग।'
बिहारी ने अतिशयोक्ति अलंकार के माध्यम से प्रेम के वियोगपक्ष का वर्णन-चित्रण अत्यंत चमत्कार और रमणीयता के साथ किया है।
दृष्टांत: —
'औंधाई सीसी सुलखि, बिरह बरति बिललात।
बीचहि सूखि गुलाब गौ, छींटौं छुयौं न गात।'
नायक का प्रस्थान-संवाद सुनकर नायिका की आँखों में आँसू छलक आये हैं —
'ललन चलन सुनि पलन में अँसुआ झलके आय।
भई लखाइ न सखिन हू, झूठे ही जमुहाय।'

संयोगशृंगार के अन्तर्गत भी बिहारीलाल ने अपना वाग्वैदग्ध्य प्रदर्शित किया है। राधा और कृष्ण की परस्पर संलापप्रियता का चारु वर्णन इस

प्रकार है—
'बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौंहनि हँसै, देन कहै, नटि जाय।'
राधा कृष्ण के साथ बहुत बातें इसलिए नहीं कर पाती कि वे सदैव अपने होंठों पर मुरली रखे रहते हैं। राधा को एक युक्ति सूझती है। वह मुरली को छिपाकर रख देती है। श्रीकृष्ण पुनः निवेदन करते हैं कि मुरली का पता राधा बता दें। पहले तो राधा शपथ खाती है कि उसने मुरली नहीं छिपायी है, किन्तु भौंहों में हँसाती है। कृष्ण को संदेह हो जाता है। राधा देने को कहती है। इस प्रकार दोनों बातचीत करते बहुत दूर तक चले जाते हैं। अंत में राधा कहती है कि मैंने मुरली नहीं छिपायी है।
श्रृंगारवर्णन के संयोगपक्ष में मदभरे नयन का चित्र इस प्रकार है—
'कर जीते सर नैन के ऐसे देखे मैं न।
हरिनी के नैनान तें हरि नीके ये नैन।'
रूपसुधा का वर्णन इस प्रकार है—
'रूप-सुधा-आसव छक्यौ, आसव पियत बनै न।
प्यालै ओठ प्रिया-बदन, रह्यौ लगाये नैन।'
शांतरस के अनक्रम में भी बिहारीलाल में उत्कर्ष मिलता है। बिहारीलाल कृष्णभक्त कवि थे। उन्होंने कृष्णकाव्य-क्रम में भक्ति और श्रृंगार का वर्णन किया है। कहीं श्रृंगार प्रमुख है कहीं भक्ति।

सतसई का आरंभिक दोहा मंगलाचरणमूलक भक्ति से युक्त है —

। मेरी भवबाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।।

दूसरा दोहा भी इसी भक्ति के वर्णन में है —

। सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल।
यहि बानक मो मन बसौ सदा बिहारीलाल।

बिहारीलाल अपनी भव - बाधा के परिहार के लिए राधा से निवेदन करते हैं।

इसप्रकार, बिहारी का भावपक्ष उत्कर्षमूलक और सरस है। मुक्तक रचना के कारण ही बिहारी में कल्पना की समाहारशक्ति के साथ भाषा की समासशक्ति भी है। यही कारण है कि दोहा जैसे छोटे छंद में वे इतना रस भर सके हैं। दोहे मानो रस की छोटी - छोटी पिचकारियाँ हैं।

कलापक्ष :—